



Durood e Paak Ke Fazail (Hindi)

हफ्तावार रिसाल : 318
Weekly Booklet : 318

दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल

सफ़ह्यात 21

- सेब से बड़ा अनार से छोटा फल 05
- अहले सुन्नत की एक निशानी 08
- बुरी शक़ल से नजात 12
- एक ताजिर का वाक़िआ 15

पेशकश :

अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शौखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी

रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ٤٠ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
व बक्कीअ
व मरिफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल

सिने त्बाअत : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1445 हि., सितम्बर 2023 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इलितजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला “दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरतब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल

दुआए अत्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला : “दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल” पढ़ या सुन ले उसे कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफीक़ दे और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें भेजता है ।

(مسلم، ص 172، حديث: 912)

हज़रते शैख़ अबू अब्दुल्लाह रस्साअ़ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : रहमत इन्आम को कहते हैं, (इस रिवायत का मतलब येह है कि) अल्लाह पाक दुन्या व आख़िरत में बन्दे को मुसल्लसल इन्आमात से नवाज़ता है । क़ाज़ी अबू अब्दुल्लाह सक्काकी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अल्लाह करीम की “एक रहमत” दुन्या और जो कुछ दुन्या में है उस से बेहतर है तो तुम उस के बारे में क्या गुमान करते हो जिसे अल्लाह करीम दस रहमतों से नवाज़े, अल्लाह पाक दस रहमतों से उस बन्दे से कितनी आफ़तें, मुसीबतें दूर फ़रमाएगा और उन दस रहमतों से कितनी बरकतें हासिल होंगी । शैख़ अबू अताउल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अल्लाह करीम जिस पर एक रहमत नाज़िल फ़रमाएगा वोह उस की दुन्या व आख़िरत के सब मुआमलात में किफ़ायत

करेगी तो जिस पर दस रहमतें नाज़िल हों उस का क्या आलम होगा ?

(مطالع السرات، ص 30)

रहमत दा दरिया इलाही हर दम वगदा तेरा जे इक क़तरा बख़्रो मेनूँ कम बन जावे मेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

रोजे जुमुआ दुरूद

अल्लाह पाक के महबूब صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने हकीकत निशान है : तुम्हारे दिनों में सब से अफ़ज़ल दिन जुमुआ है, इसी दिन हज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह पैदा हुए, इसी में इन की रूहे मुबारका क़ब्ज़ की गई, इसी दिन सूर फूँका जाएगा और इसी दिन हलाकत तारी होगी लिहाज़ा इस दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूँ कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : “ या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप के विसाल के बा’द दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचाया जाएगा ?” इर्शाद फ़रमाया कि “अल्लाह पाक ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अज्जसाम को ज़मीन पर खाना हराम फ़रमाया है।”

(ابوداود، 1/391، حديث: 1047)

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

पुल सिरात पर नूर

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मेरे ऊपर दुरूद पुल सिरात के लिये नूर है, जो मुझ पर जुमुआ के दिन अस्सी मरतबा दुरूद भेजता है, अल्लाह पाक उस के अस्सी साल के गुनाहों को मुआफ़ कर देता है।

(جامع صغير، ص 320، حديث: 5191)

जुमुआ के दिन हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ने की फ़ज़ीलत

रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो जुमुआ के दिन मुझ पर हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह मरेगा नहीं जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले। (الترغيب والترهيب، 2/328، حديث: 22)

चेहरा रोशन हो गया

हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने तवाफ़े का'बा करते हुए एक ऐसे जवान को देखा जो क़दम क़दम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ रहा था। सुफ़्यान सौरी कहते हैं : मैं ने कहा : ऐ जवान ! तुम तस्बीहो तहलील (سُبْحَانَ اللهِ) और छोड़ कर सिर्फ़ दुरूद शरीफ़ ही पढ़ रहे हो, क्या इस की कोई खास वजह है ? जवान ने पूछा : आप कौन हैं ? मैं ने जवाब दिया : सुफ़्यान सौरी। उस ने कहा : अगर आप का शुमार अल्लाह पाक के नेक बन्दों में न होता तो मैं कभी भी आप को येह राज़ न बताता ! हुवा यूं कि मैं अपने बाप के हमराह हज़ के इरादे से निकला, रास्ते में एक जगह मेरा बाप सख़्त बीमार हो गया, मैं ने बहुत कोशिश की मगर उसे मौत से न बचा सका, मौत के बा'द उन का चेहरा सियाह हो गया, मैं ने "قَالَ إِنَّ اللَّهَ وَإِنَّا إِلَهُ سُرَجُون" पढ़ कर उन का चेहरा ढक दिया, इसी ग़म की कैफ़ियत में मेरी आंखें भारी हो गईं और मुझे नींद आ गई। मैं ने ख़्वाब में एक ऐसे हसीन को देखा जो हुस्न में बे मिसाल था, उस का लिबास निहायत साफ़ सुथरा था और उस के पाकीज़ा जिस्म से खुशबू की लहरें उठ रही थीं, वोह नाज़ के साथ चलता हुवा आया और मेरे बाप के चेहरे से कपड़ा हटा कर हाथ से चेहरे की तरफ़ इशारा किया, मेरे बाप का चेहरा सफ़ेद हो गया। जब वोह वापस तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं ने दामन थाम कर अर्ज़ की : अल्लाह पाक ने आप के तुफ़ैल इस ग़रीबुल वतनी में मेरे बाप की आबरू रख ली, आप कौन हैं ?

उन्होंने ने फ़रमाया : तुम मुझे नहीं पहचानते ? मैं साहिबे कुरआन, **अल्लाह** का नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूँ (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ), तेरा बाप अगर्चे बहुत गुनहगार था मगर मुझ पर कसरत से दुरूद भेजता था, जब इस पर मुसीबत नाज़िल हो गई तो इस ने मुझ से मदद त़लब की और मैं हर उस शख़्स का जो मुझ पर कसरत से दुरूद भेजता है, फ़रियाद रस (फ़रियाद सुनने वाला) हूँ। जवान ने कहा : इस के बा'द अचानक मेरी आंख खुल गई, मैं ने देखा मेरे बाप का चेहरा सफ़ेद हो चुका था।

(تفسير روح البیان، پ 22، الاحزاب، تحت الاية: 7، 56: 225: تغیر قلیل)

दुरूदे पाक के मक़ासिद व फ़वाइद

हज़रते हलीमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ (मतवफ़ा 403 हि.) फ़रमाते हैं : “दो अ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ने का एक मक़सद तो यह है कि **अल्लाह** पाक का हुक्म बजा लाते हुए उस का कुर्ब हासिल किया जाए और दूसरा यह कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का हम पर जो हक़ है उसे अदा किया जाए।”

हज़रते इब्ने अब्दुस्सलाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ (मतवफ़ा 660 हि.) ने भी इन की इत्तिबाअ करते हुए इर्शाद फ़रमाया : “हमारा नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक भेजना इन के लिये क़त्अन किसी क़िस्म की सिफ़ारिश का बाइस नहीं बनता क्यूं कि हम जैसे इन्सान उन जैसी हस्ती की शफ़ाअत कैसे कर सकते हैं ? अलबत्ता ! **अल्लाह** पाक ने हमें हुक्म दिया है कि हम अपने मोहसिने आ'ज़म صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के एहसानात का बदला दें और अगर ऐसा न कर सकें तो उन के हक़ में दुआ करें। पस **अल्लाह** पाक ने हमारी हालत के पेशे नज़र कि हम अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के एहसानात का बदला देने

से आजिज़ हैं तो हमें उन पर दुरूदे पाक भेजने की ता'लीम फ़रमाई ।” हज़रते शैख़ अबू मुहम्मद मरजानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ से भी कुछ इसी तरह का कलाम मन्कूल है ।

हज़रते काज़ी अबू बक्र इब्नुल अरबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ (मुतवफ़ा 543 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : “हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ने का फ़ाएदा खुद पढ़ने वाले को होता है क्यूं कि येह बात अच्छे अक्कीदे, ख़ालिस निय्यत, इज़्हारे महब्बत, हमेशा फ़रमां बरदार रहने और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वासितए मुबारका को मोहतरम जानने पर रहनुमाई करती है ।”

(المواهب اللدنية للسلطانى، 2/504:506)

हज़रते अबुल मवाहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मुझे ख़्वाब में रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत का शरफ़ हासिल हुवा तो आप ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : “क़ियामत के दिन तुम एक लाख बन्दों की शफ़ाअत करोगे ।” मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मैं इस काबिल कैसे हुवा ? तो इर्शाद फ़रमाया : “इस लिये कि तुम मुझ पर दुरूद पढ़ कर उस का सवाब मुझे भेज देते हो ।”

(الطبقات للشعرانى، رقم: 2/318:101)

हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जो शख़्स हौजे कौसर से भरा पियाला पीना चाहे वोह इस दुरूदे पाक को पढ़े :

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَأَوْلَادِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ وَأَهْلِ بَيْتِهِ وَأَصْهَارِهِ وَأَنْصَارِهِ وَأَشْيَاعِهِ وَحُبِّيَّتِهِ وَأُمَّتِهِ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ أَجْمَعِينَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ - (الشفاء، جزء ثانى، ص 72)

सेब से बड़ा अनार से छोटा फल

अमीरुल मुअमिनीन हज़रत अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह करीम ने जन्नत में एक दरख़्त पैदा फ़रमाया है, जिस का फल

सेब से बड़ा, अनार से छोटा, मख़वन से नर्म, शहद से भी मीठा और मुश्क से ज़ियादा खुशबूदार है। उस दरख़्त की शाखें मोतियों की, तने सोने के और पत्ते ज़बर ज़द के हैं। उस दरख़्त का फल सिर्फ़ वोही खा सकेगा जो रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ेगा। (الحاوی للفتاوی، 2/48)

जन्नत फैल जाती है

हज़रते अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक की एक बरकत यह है कि अतराफ़े जन्नत में रहने वाले फ़िरिश्ते जब नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो जन्नत कुशादा हो जाती है। (الابری، 2/338)

हर मुसीबत में मदद

हज़रते अबू बक्र शिबली बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्हूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा : **مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟** या'नी अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? वोह बोला : मैं सख़्त होलनाकियों से दोचार हुवा, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : “दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वजह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है।” अब अज़ाब के फ़िरिश्ते मेरी तरफ़ बढ़े। इतने में एक साहिब जो हुस्नो जमाल के पैकर और मुअ़त्तर मुअ़त्तर थे, वोह मेरे और अज़ाब के दरमियान हाइल हो गए। और उन्होंने ने मुझे मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी तरह जवाबात दे दिये, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** ! अज़ाब मुझ से दूर हुवा। मैं ने उन बुजुर्ग से अर्ज़ की : **अल्लाह पाक आप पर रहूम फ़रमाए, आप कौन हैं ?**

फ़रमाया : “तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी इमदाद पर मुक़र्रर किया गया है।”

(القول البدیع، ص 260)

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अ़ला हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

क़ब्र में आका क्यूं नहीं आ सकते

कसरते दुरूद शरीफ़ की बरकत से मदद करने के लिये क़ब्र में जब फ़िरिशता आ सकता है तो तमाम फ़िरिशतों के भी आका मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ करम क्यूं नहीं फ़रमा सकते ! किसी ने बिल्कुछ बजा तो फ़रियाद की है :

मैं गोर अंधेरी में घबराऊंगा जब तन्हा इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आका
रोशन मेरी तुर्बत को लिलाह शहा करना जब नज़अ का वक़्त आए दीदार अ़ता करना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अशिके दुरूदो सलाम का मक़ाम

हज़रते शैख़ अबू बक्र शिबली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ एक रोज़ बग़दाद शरीफ़ के जय्यिद आलिम हज़रते अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पास तशरीफ़ लाए, उन्होंने ने फ़ौरन खड़े हो कर उन को गले लगा लिया और पेशानी चूम कर बड़ी ता'ज़ीम के साथ अपने पास बिठाया । एक शख़्स ने अज़्र किया : या सय्यिदी ! आप और अहले बग़दाद आज तक इन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज इन की इस क़दर ता'ज़ीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूं ही ऐसा नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلَّهِ ! आज रात मैं ने ख़्वाब में येह ईमान अफ़ोज़ मन्ज़र देखा कि हज़रते अबू बक्र शिबली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ बारगाहे

रिसालत में हाज़िर हुए तो सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खड़े हो कर इन को सीने से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे कर अपने पहलू में बिठा लिया। मैं ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ !** शिबली पर इस क़दर शफ़क़त की वजह ? **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया कि येह हर नमाज़ के बा'द येह आयत पढ़ता है :

﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾⁽¹²⁸⁾

(القول البدیع، ص 346 بتغییر قلیل)। और इस के बा'द मुझे पर दुरूद पढ़ता है। (پ 11، التوبه: 128)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

दुरूद शरीफ़ लिखने वाले की मग़िफ़रत हो गई

हज़रते सुफ़यान बिन उयैना رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : मेरा एक दीनी भाई था, मरने के बा'द उसे ख़ाब में देख कर पूछा : **يا'नी مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟** अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** पाक ने मुझे बख़्श दिया। मैं ने पूछा : किस अमल के सबब ? कहने लगा : मैं हदीस लिखता था, जब भी शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ज़िक्रे ख़ैर आता मैं सवाब की निय्यत से **“صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ”** लिखता, इसी अमल की बरकत से मेरी मग़िफ़रत हो गई। (القول البدیع، ص 463)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

मालिके जन्नत, साक़िये कौसर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आली निशान है : **يا'नी لَيَرِدَنَّ الْحَوْضَ عَلَى أَقْوَامٍ مَا أَعْرَفْتُهُمْ إِلَّا بِكثْرَةِ الصَّلَاةِ عَلَيَّ** : “पर कुछ लोग मेरे पास आएंगे जिन्हें मैं कस्ते दुरूद के सबब पहचान लूंगा।”

(القول البدیع، ص 264)

अहले सुन्नत की एक निशानी

हज़रते इमाम ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन बिन अली رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ

फ़रमाते हैं : صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ يَا نَبِيَّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ يَا نَبِيَّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 पर कसरत से दुरूद पढ़ना अहले सुन्नत की निशानी है । (القول البدیع، ص 131)

दर्द और सूजन ख़त्म हो गई

हज़रते अब्दुरहमान बिन अहमद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فَرَمَاتے हैं : मैं “हम्माम” में गया तो गिर गया, दर्द की वजह से हाथ सूज गया, रात को इसी तकलीफ़ में (दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते) सो गया, ख़्वाब में प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, मैं ने इल्तिजा करते हुए कहा : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! तो आप ने मुझे से फ़रमाया : मेरे बेटे ! (हालते तकलीफ़ में) तेरे दुरूद (पढ़ने) ने मुझे बेचैन कर दिया । जब सुबह हुई तो प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बरकत से दर्द और सूजन का नामो निशान तक न था । (القول البدیع، ص 328 ملقطا)

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर वही आई

अल्लाह पाक ने हज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام पर वही नाज़िल फ़रमाई : ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ! क्या तुम चाहते हो कि जिस क़दर तुम्हारा कलाम तुम्हारी ज़बान के, तुम्हारे ख़यालात तुम्हारे दिल के, तुम्हारी रूह तुम्हारे बदन के, तुम्हारी बीनाई का नूर तुम्हारी आंख के करीब है, मैं इस से भी ज़ियादा तुम्हारे करीब हो जाऊं ? अर्ज़ किया, हां ! फ़रमाया : फिर मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ भेजो । (حلیة الاولیاء، 6/33، رقم 7716)

नूहो ख़लीलो मूसा व ईसा सब का है आका नामे मुहम्मद
 पाई मुरादे दोनों जहां में जिस ने पुकारा नामे मुहम्मद
 दोनों जहां में दुन्या व दीं में है इक वसीला नामे मुहम्मद

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अपनी किताब “शर्हुस्सुदूर” में लिखते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हयाते ज़ाहिरी में फ़ौत होने वाले के पास येह कहा जाता था : ऐ अल्लाह पाक ! फुलां बिन फुलां की मग़िफ़रत फ़रमा, इस की क़ब्र को ठन्डी और वसीअ कर दे, मरने के बा’द इसे चैन अता फ़रमा, प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कुर्ब नसीब कर, इसे दोस्त रख और इस की रूह को नेकों की अरवाह की तरफ़ बुलन्द फ़रमा, हमें इस के साथ ऐसे घर में जम्अ फ़रमा जिस में सिद्दह्त बाकी रहे, दुख और थकावट दूर हो । नीज़ बारगाहे रिसालत में मुसल्लसल दुरूद पढ़ा जाता, यहां तक कि उस की रूह क़ब्ज़ हो जाती । (شرح الصدور، ص 37)

किताब में दुरूदे पाक लिखने की बरकत

हज़रते अब्दुल्लाह बिन सालेह सूफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ से मरवी है कि एक मुहद्दिस को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : मुझे बख़्शा दिया । पूछा : किस सबब से ? कहा : अपनी किताबों में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक लिखने के सबब । (تاريخ ابن عساکر، 54/113، رقم: 6646)

दुरूदे पाक की बरकत

हज़रते हफ़्स बिन अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का बयान है कि हज़रते अबू जुरअ रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की वफ़ात के बा’द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो वोह आस्मान में फ़िरिशतों के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे, मैं ने कहा : इस बुलन्द रुत्बे तक कैसे पहुंचे ? फ़रमाया : मैं ने अपने हाथ से एक लाख अहादीसे मुबारका लिखी हैं और मैं ने उन सब में दुरूदे पाक पढ़ा है और हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमान है : مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا :

या'नी जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है, अल्लाह पाक उस के बदले उस पर 10 रहमतेँ नाज़िल फ़रमाता है। (तारीख़ بغداد، 10/334، رقم: 5469)

मय्यित को ख़्वाब में देखने का अमल

एक औरत हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के पास हाज़िर हुई और कहने लगी : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, मैं चाहती हूँ कि उसे ख़्वाब में देख लूँ, कोई ऐसी दुआ बतलाइये जिस से मेरी मुराद पूरी हो जाए। आप ने उसे एक दुआ सिखलाई। उस औरत ने रात में वोह दुआ पढ़ी और अपनी बेटी को ख़्वाब में देखा तो उस का हाल येह था कि उस ने जहन्नम के तारकोल (डामर) का लिबास पहन रखा था, उस के हाथों में जन्जीरें और पाउं में बेड़ियां (कड़ियां) थीं। औरत ने दूसरे दिन येह ख़्वाब आप को सुनाया, आप बहुत ग़मगीन हुए। कुछ अर्से बा'द हज़रते हसन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने उस लड़की को जन्नत में देखा, उस के सर पर ताज था, वोह आप से कहने लगी : आप मुझे पहचानते हैं ? मैं उसी ख़ातून की बेटी हूँ जो आप के पास आई थी और मेरी तबाह हालत आप को बतलाई थी। आप ने उस से पूछा : तेरी हालत में येह इन्क़िलाब किस तरह आया ? लड़की ने कहा : क़ब्रिस्तान के करीब से एक सालेह (नेक) शख़्स गुज़रा और उस ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजा, उस के दुरूद पढ़ने की बरकत से अल्लाह पाक ने हम पांच सो क़ब्र वालों से अज़ाब उठा लिया। (مكاشفة القلوب، ص 24)

नुक्ता : ग़ौर का मक़ाम है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर एक शख़्स के दुरूद भेजने की बरकत से इतने ज़ियादा लोग बख़्शे गए, क्या वोह शख़्स जो पचास साल से हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेज रहा हो, क़ियामत में उस की मरिफ़रत नहीं होगी ! (مكاشفة القلوب، ص 24)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

जिस्म व रूह की सलामती

किसी अक्ल मन्द का कौल है कि जिस्म की सलामती कम खाने में है और रूह की बका कम गुनाहों में है और ईमान की सलामती हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर सलातो सलाम पढ़ने में है ।

(مكاشفة القلوب، ص 9)

बुरी शकल से नजात

कहते हैं कि एक आदमी ने जंगल में एक बुरी शकल को देख कर पूछा : तू कौन है ? उस ने जवाब दिया : मैं तेरा बुरा अमल हूं। उस आदमी ने पूछा : तुझ से नजात की भी कोई सूत है ? उस ने जवाब दिया कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद पढ़ना ।

(مكاشفة القلوب، ص 30)

दुरूद न भेजने वाले से हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ए'राज़

एक आदमी हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद शरीफ़ नहीं भेजता था, एक रात उस ने ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को देखा, आप ने उस की तरफ़ तवज्जोह न फ़रमाई, उस आदमी ने अर्ज़ किया कि क्या हुज़ूर मुझ से नाराज़ हैं इस लिये तवज्जोह नहीं फ़रमाई ? आप ने जवाब दिया : नहीं ! मैं तुम्हें पहचानता ही नहीं हूं, अर्ज़ की गई : हुज़ूर मुझे कैसे नहीं पहचानते हालां कि उलमा कहते हैं कि आप अपने उम्मतियों को उन की मां से भी ज़ियादा पहचानते हैं। आप ने फ़रमाया : उलमा ने सच कहा है लेकिन तू ने मुझे दुरूद भेज कर अपनी याद नहीं दिलाई, मेरा कोई उम्मती मुझ पर जितना दुरूद भेजता है मैं उसे उतना ही पहचानता हूं। उस शख्स के दिल में येह बात बैठ गई और उस ने रोज़ाना एक सो मरतबा दुरूद पढ़ना शुरू कर दिया। कुछ मुद्दत बा'द हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के दीदार से फिर ख़्वाब में मुशरफ़ हुवा, आप ने फ़रमाया : मैं अब तुझे पहचानता हूं और मैं तेरी शफ़ाअत करूंगा।

(مكاشفة القلوب، ص 30)

दरिन्दे से नजात कैसे मिली ?

हज़रते अबुल हसन अली शाज़िली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ एक जंगल में थे कि अचानक उन के सामने एक दरिन्दा (वहशी जानवर) आ गया, उन को अपनी जान की फ़िक्र पड़ गई, पस उन्होंने ने ख़ौफ़ज़दा हो कर नबिय्ये करीम (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की जाते मुक़द्दसा पर दुरूदो सलाम पढ़ना शुरू कर दिया जिस की बरकत से आप को उस दरिन्दे से नजात मिली और आप की जान बच गई ।

(سعادة الدارين، ص 152)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ عَنْهُ अपने भाई हज़रते उस्मान से मुलाक़ात के लिये गए, वोह बहुत खुश दिखाई दे रहे थे, (खुशी की वजह पूछी गई तो) बताया कि आज रात मैं ख़्वाब में प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दीदार से मुशरफ़ हुवा, आप ने मुझे एक डोल (या'नी बरतन) अता फ़रमाया, जिस में पानी था, मैं ने पेट भर कर पिया, जिस की ठन्डक अभी तक महसूस कर रहा हूँ । हज़रते अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने पूछा : आप को येह मक़ाम कैसे हासिल हुवा ? फ़रमाया : हुजूर नबिय्ये करीम (سعادة الدارين، ص 149) पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की वजह से ।

दुरूदो सलाम पढ़ने की बरकत

अबू अरूबा अल हरासी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का मा'मूल था कि आप के सामने जब कोई अहादीस पढ़ता तो आप दुरूदो सलाम पढ़े बिगैर न रहते और ख़ूब ज़ाहिर कर के पढ़ते और कहा करते कि हदीस शरीफ़ पढ़ने की एक बरकत येह है कि दुन्या में कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ने की सआदत मिलती है और आख़िरत में اِنْ شَاءَ اللهُ जन्नत की ने'मतें मिलेंगी ।

(سعادة الدارين، ص 198)

कसरते दुरूद ने हलाकत से बचा लिया (वाकिआ)

हज़रते शैख़ हुसैन बिन अहमद कव्वाज़ बिसाती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने अल्लाह पाक से येह दुआ की, कि (या अल्लाह पाक!) मैं ख़्वाब में अबू सालेह मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को देखना चाहता हूँ। (मेरी दुआ मक़बूल हुई और) मैं ने ख़्वाब में उन्हें अच्छी हालत में देख कर पूछा : ऐ अबू सालेह ! आप कैसे हैं ? फ़रमाया : ऐ अबुल हसन ! अगर सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जाते गिरामी पर दुरूदे पाक की कसरत न की होती तो मैं हलाक (या'नी बरबाद) हो गया होता। (سَعَادَاتُ الدَّارَيْنِ، ص 136)

जाते वाला पे बार बार दुरूद बार बार और बे शुमार दुरूद

बैठते उठते जागते सोते हो इलाही! मेरा शिआर दुरूद

أَمِينِ بِجَاهِ خَاتَمِ التَّيْبِينِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हर दर्द की दवा

एक मरतबा ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ बीमार हो गए, बहुत इलाज करवाया मगर शिफ़ा न मिल सकी, इसी हालत में छे महीने गुज़र गए। एक दिन उन्हें पता चला कि हज़रते शैख़ शिबली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ महल के पास से गुज़र रहे हैं तो ख़लीफ़ा ने उन्हें अपने पास तशरीफ़ लाने की दरख़्वास्त की। जब आप तशरीफ़ लाए तो ख़लीफ़ा को देख कर इर्शाद फ़रमाया : फ़िक्र न करो, अल्लाह पाक की रहमत से आज ही आराम आ जाएगा। फिर आप ने दुरूदे पाक पढ़ कर ख़लीफ़ा के जिस्म पर हाथ फेरा तो वोह उसी वक़्त तन्दुरुस्त हो गए। (राहतुल कुलूब (फ़ारसी), स. 50)

صَلِّ عَلَى مَنْ هُوَ هَرِّهِ تَأْتِيهِ دَوَاهُ كُلِّ دَاءٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

एक ताजिर का वाकिआ

एक ताजिर बड़ा खुशहाल था, कारोबार ठीकठाक चल रहा था, पैसों की रेलपेल थी, फिर वक़्त ने अंगड़ाई ली, उस ताजिर के माली हालात ख़राब होने लगे, कारोबार में नुक़सान होते होते नौबत यहां तक आ पहुंची कि उस का कारोबार बिल्कुल ख़त्म हो गया और वोह बेचारा बिल्कुल मोहताज हो कर रह गया। उस ने किसी दोस्त से तीन हज़ार (3000) (सोने के सिक्के) क़र्ज़ लिया था और वापसी की तारीख़ मुक़र्रर थी, क़र्ज़ ख़्वाह ने मुक़र्ररा तारीख़ पर क़र्ज़ की वापसी का मुतालबा किया, इस बेचारे ने मा'ज़िरत चाही कि भाई मैं मजबूर हूं, मेरे पास कोई चीज़ नहीं है। क़र्ज़ ख़्वाह ने क़ाज़ी के पास जा कर मुक़द्दमा दर्ज करवा दिया। क़ाज़ी साहिब ने उस मक़्रूज़ ताजिर को त़लब किया और मुक़द्दमे की बा क़ाड़दा समाअत के बा'द उस मक़्रूज़ ताजिर को एक माह की मोहलत दी और ताकीद की, कि इस मुद्दत में ज़रूर क़र्ज़ की वापसी का इन्तिज़ाम कर लो। वोह मक़्रूज़ ताजिर बड़ा परेशान हुवा, सोचने लगा कि क्या करूं? मुम्किन है कि उस ने कहीं पढ़ा हो या उ़लमा से सुना हो कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादि गिरामी है : जिस बन्दे पर कोई मुसीबत, कोई परेशानी आ जाए तो वोह मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करे, क्यूं कि दुरूदे पाक मुसीबतों और परेशानियों को ले जाता है और रिज़क़ बढ़ाता है। अल हासिल उस ने अज़िज़ी के साथ मस्जिद के गोशे (एक कोने) में बैठ कर दुरूदे पाक पढ़ना शुरूअ कर दिया। जब सत्ताईस (27) दिन गुज़र गए तो उसे रात को एक ख़्वाब दिखाई दिया, कोई कहने वाला कहता है : ऐ बन्दे ! तू परेशान न हो, **अल्लाह** करीम बड़ा कारसाज़ (काम बनाने वाला) है, तेरा क़र्ज़ अदा हो जाएगा। तू अ़ली बिन

ईसा वज़ीरे सल्तनत के पास जा और जा कर उसे कह दे कि कर्ज़ अदा करने के लिये मुझे तीन हज़ार (3000) दीनार दे दे । वोह मक्क़रूज़ ताजिर कहता है कि मैं जब बेदार हुवा तो बड़ा खुश था, परेशानी ख़त्म हो चुकी थी, लेकिन फिर येह ख़याल भी आया कि अगर वज़ीर साहिब कोई दलील या निशानी त़लब करेंगे तो मेरे पास कोई दलील नहीं है । येही सोचते हुए दूसरी रात आ गई जब मैं सोया तो क़िस्मत जाग उठी, मुझे आकाए दो जहां, रहमते दो अ़ालम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार नसीब हुवा, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भी अ़ली बिन ईसा वज़ीर के पास जाने का इर्शाद फ़रमाया । जब आंख खुली तो खुशी की इन्तिहा न थी, तीसरी रात फिर उम्मत के वाली صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ लाते हैं और फिर हुक्म फ़रमाते हैं कि वज़ीर अ़ली बिन ईसा के पास जाओ और उसे येह फ़रमान सुना दो । अर्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! कोई निशानी या दलील इर्शाद फ़रमा दीजिये जो मैं उस वज़ीर को बताऊं । येह सुन कर मंगतों की झोलियां भरने वाले दाता, सखावत के दरिया बहाने वाले आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि अगर वज़ीर तुझ से कोई अ़लामत पूछे तो कह देना कि तुम नमाज़े फ़ज़्र के बा'द किसी के साथ बात करने से पहले **रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ज़ात पर पांच हज़ार (5000) बार दुरूदे पाक पढ़ते हो, जिसे **अल्लाह** करीम और किरामन कातिबीन के सिवा कोई नहीं जानता । येह फ़रमा कर सय्यिदे दो अ़ालम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले गए । मैं बेदार हुवा, नमाज़े फ़ज़्र के बा'द मस्जिद से बाहर क़दम रखा, ग़ौर किया तो मा'लूम हुवा कि आज मोहलत को मुकम्मल एक माह गुज़र चुका था । मैं वज़ीर साहिब की रिहाइश गाह पर पहुंचा और वज़ीर साहिब से सारा क़िस्सा कह सुनाया, जब

वज़ीर साहिब ने कोई निशानी मांगी और मैं ने आका करीम, रसूले अज़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इर्शाद सुनाया तो वज़ीर साहिब खुशी व मसरत से झूम उठे, वोह घर के अन्दर गए और नव हज़ार (9000) दीनार ले कर आ गए, उन में से तीन हज़ार (3000) गिन कर मेरी झोली में डाल दिये और कहा : येह तीन हज़ार (3000) क़र्ज़ की अदाएगी के लिये हैं, फिर तीन हज़ार (3000) और दिये और कहा : येह तेरे बाल बच्चों के खर्चे के लिये हैं। फिर तीन हज़ार (3000) और दिये और कहा : येह तेरे कारोबार के लिये हैं। जब मुझे रुख़सत करने लगे तो क़सम दे कर कहा : ऐ भाई ! तू मेरा दीनी और ईमानी भाई है, खुदारा ! येह महबबत वाला तअल्लुक न तोड़ना और जब भी कोई काम हो, किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बिला रोकटोक आ जाना, मैं आप का मस्अला दिलो जान से हल कर दिया करूंगा। उस शख़्स का बयान है कि मैं वोह रक़म ले कर सीधा क़ाज़ी साहिब की अदालत में पहुंच गया और जब फ़रीक़ैन को बुलाया गया तो मैं आगे बढ़ा और मैं ने तीन हज़ार (3000) दीनार गिन कर क़ाज़ी साहिब के सामने रख दिये। अब क़ाज़ी साहिब ने सुवाल कर दिया कि बता तू येह इतनी सारी रक़म कहां से ले कर आया है ? हालां कि तू तो मुफ़्लिस और कंगाल था। मैं ने सारा वाकिआ बयान कर दिया, क़ाज़ी साहिब ने येह सुना तो ख़ामोश हो गए, फिर उठ कर अपने घर गए और घर से तीन हज़ार (3000) दीनार ले कर आ गए और कहने लगे : सारी बरकतें वज़ीर साहिब ने ही क्यूं लूट लीं, मैं भी उसी दर का गुलाम हूं, तेरा येह तमाम क़र्ज़ा मैं अपनी जेब से अदा करता हूं। जब क़र्ज़ ख़्वाह ने येह माजरा देखा तो वोह कहने लगा कि सारी रहमतें तुम लोग

ही क्यूं समेट लो, मैं भी उन की रहमत का हक़दार हूं। यह कह कर उस ने तहरीरी तौर पर लिख कर दे दिया कि मैं **अल्लाह** करीम और उस के रसूले अज़ीम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की रिज़ा के लिये इस बन्दे का कर्ज़ मुआफ़ करता हूं। यह देख कर उस मक्क़रुज़ ताजिर ने काज़ी साहिब से कहा : जनाब आप का बहुत शुक्रिय्या। आप अपनी रक़म संभाल लीजिये, अब मुझे इस की ज़रूरत नहीं रही। तो काज़ी साहिब कहने लगे : मैं **अल्लाह** और उस के प्यारे रसूल **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महबबत में जो दीनार लाया हूं वोह वापस लेने को हरगिज़ तय्यार नहीं हूं, येह आप का है, आप इसे ले जाएं। वोह साहिब कहते हैं : मैं जो पहले कर्ज़ों में जकड़ा हुवा था अब वोह बारह हज़ार (12000) दीनार ले कर घर आ गया, मेरा कर्ज़ा भी मुआफ़ हो गया, घर के लिये अख़राजात भी मिल गए और कारोबार करने के लिये भी अच्छी ख़ासी रक़म मिल गई। येह सारी बरकतें दुरूदे पाक पढ़ने की वजह से ज़ाहिर हो गईं।

(237) *جذب القلوب*, तारीख़े मदीना (मुतर्जम), स. 335

मुश्किल जो सर पे आ पड़ी तेरे ही नाम से टली **मुश्किल कुशा है तेरा नाम तुझ पर दुरूद और सलाम**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

बरकाते दुरूदे पाक

हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी **رَضِيَ اللهُ عَنْهُ** फ़रमाते हैं :

❀ दुरूद शरीफ़ से मुसीबतें टलती हैं... ❀ बीमारियों से शिफ़ा हासिल होती है... ❀ ख़ौफ़ दूर होता है... ❀ जुल्म से नजात हासिल होती है... ❀ दुश्मनों पर फ़तह हासिल होती है... ❀... दिल में आप की महबबत पैदा होती है और **अल्लाह** की रिज़ा हासिल होती है... ❀ फ़िरिश्ते उस का ज़िक़र करते हैं... ❀ दिलो जान, अस्बाब व माल की पाकीज़गी हासिल होती है...

❀ बरकतें हासिल होती हैं... ❀ औलाद दर औलाद चार नस्लों तक बरकत रहती है... ❀ दुरूद शरीफ़ पढ़ने से क़ियामत की होलनाकियों से नजात हासिल होती है... ❀ सकरते मौत में आसानी होती है... ❀ दुन्या की तबाह कारियों से नजात मिलती है... ❀ तंगदस्ती दूर होती है... ❀ भूली हुई चीज़ें याद आ जाती हैं... ❀ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला जब पुल सिरात से गुज़रेगा तो नूर फैल जाएगा और वोह साबित क़दम हो कर पलक झपकने में नजात पा जाएगा... ❀ अज़ीम तर सआदत येह है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का नाम हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में पेश किया जाता है... ❀ ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्वत बढ़ती है... ❀ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़ूबियां और अच्छाइयां दिल में घर कर जाती हैं... ❀ कस्ते दुरूद शरीफ़ से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का तसव्वुर ज़ेहन में क़ाइम हो जाता है... ❀ खुश नसीबों को दरजए कुर्बते मुस्तफ़वी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हासिल हो जाता है... ❀ ख़्वाब में सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का दीदारे फ़ैज़ आसार नसीब होता है... ❀ रोज़े क़ियामत मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मुसाफ़हे की सआदत नसीब होगी... ❀ फ़िरिशते मरहबा कहते हैं और महब्वत रखते हैं... ❀ फ़िरिशते उस के दुरूद को सोने के क़लमों से चांदी की तख़्तियों पर लिखते और उस के लिये दुआए मग़िफ़रत करते हैं... ❀ फ़िरिशतगाने सय्याहीन (ज़मीन पर सैर करने वाले फ़िरिशते) उस के दुरूद शरीफ़ को मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में पढ़ने वाले और उस के बाप के नाम के साथ पेश करते हैं । (جذب القلوب، تारीखه مदीنا (मुतर्जम), स. 326 मुलख़बसन)

